श्रवण बाधितो की पहचान सम्बन्धी व्यवहारात्मक लक्षण

04

(Behavioural Indicators for Indentification of Hearing Impaired children)

श्रवण बाधित बच्चों की पहचान के लिए व्यवहार निरीक्षण अधिक उपयोगी माना जाता है, क्योंकि बच्चो के निरीक्षण से ही उसकी श्रवण बाधित का बोध होता है। कुछ मुख्य व्यवहारात्मक लक्षणों का वर्णन इस प्रकार है —

(1) वाणी दोष का होना

(2) अनुदेशनों का अनुसरण करने मे असमर्थ होते है

(3) इनमे अवधान का अभाव होता है।

(4) अपने सिर को एक तरह मुड़कर बात को सुनने का प्रयत्न करते है।

(5) कक्षा के अन्तर्गत अक्सर शिक्षक से पाठ्यवस्तु की पुनरावृत्ति या दोहराने को कहते है।

(6) अक्सर कान में दर्द रहता है।

(7) शाब्दिक सम्प्रेषण मे कठिनाई का अनुभव करते है

(8) ऐसे बच्चो की दृष्टि बोलने वाले होंठो की तरह अधिक रहती है।

Scanned with CamScanner

APPOINTMENTS

NOTES

05

(9) ये सीमित शब्दावली का प्रयोग करते हैं।

(10) इनकी भाषा का सही विकल्प नहीं होता है।

(11) ये बाद-विवाद के कार्यक्रम में हमेशा संकोच करते हैं।

(12) अक्सर इनका कान बहता रहता है।

(13) कक्षा में बालक कान में आवाज़ सुनने के यन्त्र का प्रयोग करता है।

इस प्रकार के व्यवहार से अध्यापक श्रवण बाधित बालक की पहचान आसानी से कर सकता है। अतः अध्यापक को ऐसे बच्चों पर पूरा ध्यान देना चाहिए।

श्रवण बाधित बच्चों की शिक्षा
(Education of Hearing Impaired Children)

श्रवण बाधित बच्चों के लिए चार प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। श्रवण बाधित बालकों की दिन-प्रतिदिन की क्रियाओं को सुचारू रूप से करने के लिए कुछ सुविधाएँ दी जानी चाहिए। चार प्रकार की सुविधाएँ इस प्रकार हैं :—

1. समन्वित कक्षाकक्ष (Integrated Classrooms)
2. नियमित विद्यालयों में विशेष कक्षा (Special Class in Regular School)
3. विशेष विद्यालय (Special Schools)
4. आवासीय विद्यालय (Residential Schools)

❖ Worry is interest paid on trouble before it is due.

July

Th	Fr	Sa	Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31

Scanned with CamScanner

1. समन्वित कक्षाकक्ष (Integrated Classrooms) इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था में श्रवण बाधित बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ सामान्य विद्यालयों में शिक्षित किया जा सकता है। कम श्रवण बाधित बच्चों को समन्वित शिक्षा व्यवस्था के द्वारा शिक्षित किया जाता है। उनकी आवश्यकताओं और समस्याओं को एक नियमित अध्यापक, विशेषज्ञों और ससाधन कक्ष सुविधाओं की सहायता से हल कर सकता है।

2. नियमित विद्यालयों में विशेष कक्षा (Special Class in Regular School) कम व मन्द गति के श्रवण बाधित बच्चों के लिए नियमित विद्यालयों में विशेष कक्षाओं की व्यवस्था की जाती है। इन बच्चों को सामान्य बच्चों से अलग कक्षाओं में शिक्षण प्रदान किया जाता है। इन बालकों की अधिगम कमियों को पृथक् कक्षाएँ आयोजित करके दूर किया जा सकता है। इन पृथक् कक्षाओं में प्रशिक्षित अध्यापक अन्य अध्यापकों के सहयोग से अपना कार्य करते हैं।

3. विशेष विद्यालय (Special Schools) जो बालक गम्भीर श्रवण बाधिता से पीड़ित होते हैं उनके लिए विशेष विद्यालयों की व्यवस्था की जाती है। इन बच्चों को सामान्य विद्यालयों में सामान्य बच्चों के साथ शिक्षित नहीं किया जा सकता। यहाँ पर बच्चों को एक विशेष पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है।

Scanned with CamScanner

07 के तथा ये सामान्य बच्चों का श्रवण बाधिता के कारण मुकाबला नहीं कर सकते।

(4) आवासीय विद्यालय (Residential Schools)

पूर्ण रूप से बधिर या पूर्णतया श्रवण बाधित बच्चों के लिए आवासीय विद्यालयों की व्यवस्था की जाती है। इन बच्चों को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। यहाँ बधिरों को शिक्षित करने सम्बन्धी सभी उपकरण, सामग्री, सुविधाएँ और प्रशिक्षित अध्यापकों की व्यवस्था होती है।

सम्प्रेषण कौशल
(Communication Skills)

श्रवण बाधित बच्चों की सबसे बड़ी समस्या सम्प्रेषण की समस्या है। वे उस स्थान पर अपने आपको छोटा महसूस करते हैं जहाँ पर शाब्दिक सम्प्रेषण की आवश्यकता होती है। वह अध्यापक जिनके द्वारा इन बच्चों को शिक्षित किया जाता है, उन्हें भी सम्प्रेषण सम्बन्धी समस्या का सामना करना पड़ता है और ये अध्यापक ही इन बच्चों को सिखाते हैं कि अपने साथी समूह व समाज के दूसरे लोगों के साथ किस प्रकार सम्प्रेषण किया जाता है। अध्यापक द्वारा इनको सम्प्रेषण कौशल सिखाने के लिए निम्न प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

❖ Wise-men never sit and wait their loss.

Scanned with CamScanner

1. मौखिक सम्प्रेषण प्रविधि (Oral Communication Approach)

इस प्रविधि द्वारा इस बात पर जोर दिया जाता है कि श्रवण बाधिताग्रस्त बच्चों के सम्प्रेषण कौशल को विकसित करने के लिए मौखिक भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। यह इस विश्वास पर आधारित है कि हाथों द्वारा सम्प्रेषण के लिए मौखिक सम्प्रेषण आवश्यक है क्योंकि हाथों द्वारा किया जाने वाला सम्प्रेषण समाज में समायोजन संबंधी बाधा पैदा करता है।

मौखिक सम्प्रेषण विधि की सभी तकनीकों में श्रवण बाधित बच्चों को यह सिखाया जाता है कि वे अपनी बची हुई श्रवण क्षमता का विकास हो सके और बोलने की योग्यता का भी जितना हो सके उतना विकास करना। ये तकनीक इस प्रकार है :—

(a) ध्वनि प्रशिक्षण (Auditory Training)

(b) ओष्ठ पठन (Speech Reading)

(a) ध्वनि प्रशिक्षण (Auditory Training)

इसके अन्तर्गत बच्चों को उसी श्रवण क्षमता के साथ प्रशिक्षित करना है जितनी उसके पास है। इस तकनीक द्वारा बच्चों को ध्वनि जागरूकता के बारे में सिखाया जाता है तथा विभिन्न प्रकार की आवाजों में विभेदीकरण करना सिखाया जाता है।

Scanned with CamScanner

09

(b) ओष्ठ पठन (Lip Reading / Speech Reading) ओष्ठ पठन में बालकों को होठों के हिलने व गति के आधार पर वर्णों व शब्दों को पढ़ने की शिक्षा दी जाती है। ओष्ठ पठन में दो प्रकार के उपागमों का प्रयोग किया जाता है। पहली एनलिटिकल विधि है जो इस बात पर जोर देती है कि पाठ्य-सामग्री के छोटे-छोटे शब्दों से वाक्य बनाना चाहिए। दूसरी उपागम सिन्थेटिक प्रक्रिया है। यह इस बात पर जोर देती है कि बच्चे को अपनी पाठ्य-सामग्री पर एकाग्र होना चाहिए न कि वैयक्तिक ध्वनियों पर।

२. मैनुअल सम्प्रेषण प्रविधि (Manual Communication Approach) श्रवण बाधितों में आवश्यक सम्प्रेषण कौशल विकसित करने के लिए यह प्रविधि मैनुअल सम्प्रेषण विधियों जैसे - चिन्ह भाषा और फिंगर स्पेलिंग आदि पर जोर देती है। यह विधि अत्यधिक बहरे बच्चों के लिए उपयुक्त है।

(a) चिन्ह भाषा (Sign Language) :- अत्यधिक श्रवण बाधित बच्चों के लिए चिन्ह भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। यह भाषा सामान्य भावों को समझाने के लिए हावभावों की एक प्रणाली है।

Scanned with CamScanner

चिन्ह भाषा में शब्दों, वर्णों के लिए चिन्ह बने रहते हैं। कक्षा में पढ़ाते समय अध्यापक को इस सांकेतिक भाषा का प्रयोग अधिक से अधिक करना चाहिए

(b) फिंगर स्पेलिंग (Finger Spelling)

इस विधि के अन्तर्गत हवा में उँगलियों द्वारा आकृतियाँ बनाकर लिखा जाता है। इसमें वे शब्द, जिनके लिए कोई संकेत या चिन्ह नहीं होता है जैसे किसी व्यक्ति का नाम, लिखा जाता है। इसमें अक्षरों को उँगलियों की स्थिति का प्रयोग करके समझाना होता है। फिंगर स्पेलिंग को संकेत या चिन्ह भाषा की अपेक्षा समझना कठिन होता है, क्योंकि यह अधिक एकाग्रता द्वारा ही सीखी जाती है।

Scanned with CamScanner